Importance of E-Libraries Built by Information Techonology in Present Times

(वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से निर्मित ई–पुस्तकालयों का महत्व)

Researcher
Mrs. Aparna Ariel
Librarian

सार –पुस्तकालय मानव समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। मानवीय मानसिक विकास हेतु समाज में इसका अद्वितीय स्थान है पुस्तकालयों का अपना अलग अस्तित्व नहीं होता, इसके उद्देष्य, इसकी भूमिका, इसके कार्य उन लोगों के साथ जुड़े हुए है जिसको इनके द्वारा सेवाये दी जाती है। पुस्तकालय वह स्थान है जहां विविधि प्रकार की ज्ञान, सूचनाओं, स्त्रोतों, सेवाओं आदि का संग्रह रहता है पुस्तकालय दो शब्दों से मिलकर बना है– पुस्तक + आलय = पुस्तकालय। पुस्तकालय उस स्थान को कहते है जहां पर अध्ययन सामग्री पुस्तकें, फिल्म, पत्र–पत्रिकाएं, मानचित्र, हस्त लिखित ग्रंथ, ग्रामोफोनरेकॉर्ड एवं अन्य पठनीय सामग्री संग्रहित रहती है और इस सामग्री की सुरक्षा की जाती है।

प्रस्तावना–''जिस कमरे में किताब नहीं, वह आत्माहीन शरीर जैसा है।'' – सिसेरो

ई–ग्रंथालय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के नेषनल इन्फॉमेटिक्स (एन.आई.सी.) द्वारा विकसित किया गया एकीकृत लायब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर है। यह एप्लीकेषन पुस्तकालयों की आंतरिक प्रवृत्तियों के ऑटोमेषन एवं विभिन्न ऑनलाइन सदस्य सेवाओं के लिये उपयोगी है। यह सॉफ्टवेयर इन्टरनेट पर लायब्रेरी केटलॉग प्रगट करने के लिये बिल्ट–इन वेब ऑपेक इंटरफेस प्रदान करता है। यह सॉफ्टवेयर यूनीकोड कम्प्लाइअंट है और इस प्रकार स्थानीय भाषाओं में डेटा एन्ट्री सपोर्ट करता है।

सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसा उपकरण है जिसकी सहायता से कम से कम समय में सूचना का स्थानांतरण, रिकॉडिंग, संक्षिप्तीकरण और प्रसारण किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी शब्द फेंच भाषा के **'इन्फॉरमेटिक'** और रषियन भाषा के **इन्फॉरमेटिका** शब्द से बना है। जो कि नई–नई प्रणालियों का विकास कर सूचना के संग्रहण और सूचना पुनः प्राप्ति में सहयोग करती है। सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग वर्तमान समय में इलेक्ट्रॉनिक प्रकाषन के साधनों के रुप में भी किया जा रहा है।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की षिक्षा के माध्यम से ही पुस्तकालयों का व्यवस्थापन तथा संचालन हेतु योग्य और कुषल कर्मचारियों को तैयार किया जाता है। पुस्तकालय विज्ञान तकनीकी विषयों की श्रेणी में आता है तथा यह एक सेवा संबंधी व्यवसाय है। यह प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, षिक्षा शास्त्र एवं अन्य विधाओं के सिद्धांतों एवं उपकरणों का पुस्तकालय के संदर्भ में उपयोग करता है।

उद्देष्य–बिना सूचना प्रौद्योगिकी के पुस्तकालयों द्वारा आधुनिक सेवाएं प्रदान नहीं की जा सकती इसकी सहायता से सही व्यक्ति को सही समय पर पुस्तकालय अपनी सेवाएं आसानी से प्रदान कर सकता है।

(1)पुस्तकालय द्वारा बेहतर सेवाएं प्रदान करने हेतु

(2) सूचना में तीव्र गति से वृद्धि होने के कारण

(3) मषीन पठ्नीय रिकॉर्डस् को बहु उपयोगी बनाने हेतु

(4) सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से पुस्तकालय द्वारा किये जाने वाले कार्य जैसे पुस्तक अवाप्ति, सूचीकरण, वर्गीकरण, पत्रिकाओं का नियंत्रण, परिसंचरण कार्य, भौतिक उत्पादन आदि आसानी से करने हेतु।

(5) अर्न्तराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, और स्थानीय नेटर्वक की स्थापना।

सूचना प्राप्ति के तरीके–

(1) **परम्परागत गंथालय**– जहां पर पाठक अपनी आवष्यकता की चाही गई जानकारी को पुस्तक के माध्यम से एक–एक करके सूचना को संग्रहित करता है, इस कार्य में उसे अधिक समय लगता है और उसे बहुत सारी पुस्तकों का उपयोग करना पड़ता है।

(2) **डिजीटल ग्रंथालय**– पाठक को अपनी आवष्यकता की जानकरी शीघ्रता से प्राप्त हो जाती है उसे सभी जानकारी प्राप्त करने के लिये संबंधित डिजीटल ग्रंथालय की कार्य प्रणाली और उससे प्राप्त होने वाले लाभों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त होनी चाहिए। इसके लिये आवष्यक है कि उच्च षिक्षा प्राप्त करने वाले पाठकों के लिये कम्प्यूटर और उससे होने वाले फायदे के विषय में जानकारी होना चहिए।

उपयोगिता–सूचना प्रौद्योगिकी सेवा अर्थतंत्र का आधार है। यह सूचना सम्पन्नता का एक सषक्त माध्यम है तथा यह कार्य में पारदर्षिता लाती है। सूचना तकनीक का प्रयोग योजना बनाने, नई नीति निर्धारण, के विषय निर्णय लेने एवं नये रोजगार सृजन करने में सहायक है। कम्प्यूटर की आसान उपलब्धता और इंटरनेट के प्रयोग ने विद्यार्थियों को एक ऐसा प्लेटफॉर्म उपलब्ध करा दिया है जिसके माध्यम से वे व्यापक विचार–विमर्ष कर षिक्षा या प्रषिक्षण प्राप्त कर सकते है। सूचना प्रौद्योगिकी ने सूचना क्षेत्र में एक अद्भुत क्रांति समाज में लाने का प्रयास किया है। षिक्षा (ई–लर्निंग), अनुसंधान का विकास आदि सभी क्षेत्रों में इसने कायापलट कर दी है। आज का समाज सूचना समाज कहलाने लगा है। सूचना के महत्व के साथ सूचना की सुरक्षा का महत्व भी बढ़ रहा है। विषेष रुप से सूचना सुरक्षा एवं सर्वर के विषेषज्ञों की मांग बढ़ती जा रही है।

निष्कर्ष–आधुनिक युग में बदलती हुई आवष्यकता को देखते हुए पुस्कालय एवं सूचना विज्ञान विषय में आवष्यक हो गया है कि षिक्षा प्रदान करने वाले विभिन्न विष्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय एवं

अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर चल रहे बदलाव को ध्यान में रखकर निरंतर परिवर्तन करें एवं षिक्षार्थी को इस माध्यम से नवीनतम् जानकारी प्रदान करें और इस हेतु आवष्यक है की वे सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर अपने पाठ्यक्रमों की पाठ्य वस्तु, सेवाएं उपलब्ध करायें। ग्रंथालय पद्धति इस तरह की सुविधायें प्रदान करती है संचार क्रांति के फलस्वरुप अब इलेक्ट्रॉनिक संचार को भी सूचना प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख घटक माना जाने लगा है। और इसे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी भी कहा जाता है। यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है जिसके माध्यम से षिक्षा के क्षेत्र में सम्पूर्ण कार्य–कलाप प्रभावित हुए है। यह एक ऐसा माध्यम है जिससे कम समय में ही षिक्षार्थी को अपने उपयोग की विषय वस्तु की प्राप्ति जल्द ही हो जाती है। वर्तमान में ई–पुस्तकालयों का महत्व निरंतर निरंतर बढ़ता चला जा रहा है।इसी कारण आधुनिक पुस्तकालय सूचना के पुस्तकालय कहलाते है। क्योंकि यह केवल पुस्तकों के अर्जन, प्रस्तुतीकरण, वर्गीकरण, प्रसूचीकरण, फलक व्यवस्थापन तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके अंर्तगत सूचना की खोज, प्राप्ति, संसाधन, संप्रेषण तथा पुनःर्प्राप्ति भी सम्मिलित है, आधुनिक पुस्तकालय अद्यतन सूचना संचार प्रौद्योगिकी का बहुत अच्छा उपयोग कर रहे है।

संदर्भ पुस्तकें–

(1) पुस्तकालय विज्ञान – प्रहलाद शर्मा

(2) कम्प्यूटर और सूचना तकनीक – शंकर सिंह

(3) पुस्तकालय प्रबंध – शास्त्री द्वारिकाप्रसाद